# पल्लवन

बी.ए. प्रथम वर्ष, अनिवार्य राष्ट्रभाषा हिंदी (M.I.L.) एवं (NON-HINDI)

डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर (L.N.M.U.)

किसी विषय, सूत्रवाक्य, उक्ति, लोकोक्ति इत्यादि को सारगर्भित विस्तार देकर लिखना पल्लवन कहलाता है। इसमें कथ्य की पुष्टि के लिए उदाहरणों, तर्कों आदि का प्रयोग किया जाता है। भाषा सहज और प्रवाहमयी रहे इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। पल्लवन के लिए कुछ अन्य शब्द भी प्रचलित हैं। यथा-विस्तारण, भाव-विस्तारण, भाव-पल्लवन इत्यादि। सूत्र रूप में कही गई बात में जो भाव छुपा रहता है, उस भाव को ही पल्लवन में विस्तार दिया जाता है। पल्लवन के कुछ नियम हैं, जिनका पालन अवश्य किया जाना चाहिए।

1. पल्लवन करने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि मूल वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़ लिया जाय, ताकि मूल वाक्य का सम्पूर्ण भाव ठीक से समझ में आ जाय।
2. मूल विचार के साथ-साथ आए हुए सहायक विचारों को भी ठीक से समझ लेना चाहिए।
3. मूल और सहायक विचारों को समझ लेने के बाद बारी-बारी से सभी विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिख लेना चाहिए ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटे नहीं।
4. भाव का विस्तार करते समय कथन की पुष्टि के लिए उदाहरणों, तर्कों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
5. अभिव्यक्ति स्पष्ट, मौलिक और सरल होनी चाहिए। अलंकृत, चमत्कारिक और जटिल भाषा के प्रयोग से बचने की कोशिश करनी चाहिए।
6. अनावश्यक बातों से पूर्ण बचाव करना चाहिए।
7. मूल तथा सहायक भाव का विस्तार और विश्लेषण ही करना चाहिए, उसकी आलोचना करने, उस पर टीका-टिप्पणी करने से बचना चाहिए।
8. पल्लवन में वाक्य प्रयोग अन्य पुरूष में होना चाहिए।
9. पल्लवन में बातों को पूर्ण विस्तार से लिखना चाहिए
10. पल्लवन में निबंधात्मकता का गुण होना चाहिए।

    सूत्र वाक्य इत्यादि में मूलभाव संक्षिप्त, सघन या जटिल होता है। अतः उसके विस्तार की आवश्यकता होती है। पल्लवन में सूत्र वाक्य इत्यादि का ही विस्तार होता है।

    उदाहरण के लिए कुछ सूत्रवाक्यों, सूक्तियों तथा लोकोक्तियों को देख सकते हैं-

    1.स्वाधीनता हमरा जन्मसिद्ध अधिकार है।

    2. ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।

    3.कर्म ही पूजा है।

    4. अधजल गगरी छलकत जाय।

    5.आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।

इन सूत्रवाक्यों, सूक्तियों, लोकोक्तियों में भाव और विचार आपस में एक-दूसरे के साथ बँधे रहते हैं। सूत्रवाक्य, कहावतें, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ इत्यादि जीवन के गहरे अनुभवों से उपजे होते हैं। कम शब्दों में अधिक बात कहने की क्षमता इन सूक्तियों, लोकोक्तियों में होती है। पल्लवन में इन भावों को स्पष्टता देकर पूर्ण विश्वास दिया जाता है।